संस्कृत

● **प्रथमः पाठः**

वन्दना

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि।
ओजोऽसि ओजो मयि धेहि।।१।।

असतो मा सद् गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर् मामृतं गमय।।२।।

यतो यतः समीहसे,
ततो नोऽभयं कुरु,
शन्नः कुरु प्रजाभ्यो-
ऽभयं नः पशुभ्यः ।।३।।

नमो ब्रह्मणे त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि।
ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि।
तन्मामवतु तद् वक्तारमवतु।
अवतु माम्, अवतु वक्तारम्।।४।।

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं,
सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यम् ऋतसत्यनेत्रं,
सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः।।५।।

अभ्यास प्रश्न

● **लघु उत्तरीय प्रश्न**

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

१. भक्तस्य कः स्वरूपः अस्ति?
२. भक्तः कां प्रतिज्ञां करोति?

३. भक्त: ईश्वरं किं याचते?
४. भक्त: कुत्र गन्तुम् इच्छति?
५. ईश्वरस्य के नेत्रे स्त:?

● अनुवादात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित श्लोकों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–**
(अ) तेजोऽसि तेजो .... मयि धेहि।
(ब) असतो मा .... गमय।
(स) यतो यत: .... न: पशुभ्य:।
(द) सत्यव्रतं .... शरणं प्रपन्ना:।

२. **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–**
(अ) ब्रह्म को नमस्कार है।
(ब) तुम तेज स्वरूप हो।
(स) सत्य बोलो।
(द) मेरी रक्षा करो।

● व्याकरणात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम बताइए–**
वीर्यमसि, तेजोऽसि, मामृतं, त्वमेव, सत्यात्मकं, शन्न:।

२. **निम्नलिखित धातु-रूपों में लकार, वचन और पुरुष लिखिए–**
वदिष्यामि, कुरु, अवतु, असि।

● आन्तरिक मूल्यांकन

आप जिस देवता की स्तुति करके कार्यारम्भ करते हैं, उससे सम्बन्धित मन्त्रों की एक सूची बनाइये।

शब्दार्थ

मयि = मुझ में। **धेहि** = धारण करो। **ओज:** = तेज, प्राण-बल, सामर्थ्य। **वीर्यम्** = बल, शक्ति, पराक्रम। **तेज** = आभा। **असतो** = असत्य से (अस्थिरता, बुराई से)। **मा** = मुझको। **सद्** = सत्य (स्थिरता, भलाई)। **गमय** = ले चलो (ले जाओ)। **तमस:** = अन्धकार से। **ज्योति:** = प्रकाश। **मृत्यो:** = मृत्यु से। **अमृतम्** = अमरता (की ओर)। **यतोयत:** = जिस-जिससे। **समीहसे** = चाहते हो। **तत:** = उससे। **न:** = हमें। **अभयं** = निर्भय। **शम्** = कल्याण। **ब्रह्मणे** = ब्रह्म को। **त्वाम्** = तुमको, आपको। **ऋतम्** = यथास्थिति। **माम्** = मुझको (मेरी)। **अवतु** = रक्षा करें। **वक्तारम्** = वक्ता को (की)। **सत्यव्रतम्** = सत्य का पालन करनेवाले। **सत्यपरम्** = सत्यमार्ग पर तत्पर रहनेवाले। **त्रिसत्यम्** = त्रिकाल सत्य। **त्रिकाल** = (भूत, भविष्य एवं वर्तमान; पृथ्वी, आकाशादि पञ्चभूत)। **सत्यस्य सत्यं** = पंचभूतों के नष्ट होने पर भी सत्य (स्थित)। **नेत्रम्** = प्रवर्तक। **सत्यपरम्** = सत्य ही श्रेष्ठ साधन है जिसका। **सत्** = पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश। **शरणं** = शरण में। **प्रपन्ना:** = प्राप्त हुए हैं।

●

● **द्वितीयः पाठः**

सदाचारः

(उत्तम आचरण)

सतां सज्जनानाम् आचारः सदाचारः। ये जनाः सद् एव विचारयन्ति, सद् एव आचरन्ति च, ते एव सज्जनाः भवन्ति। सज्जनाः यथा आचरन्ति तथैवाचरणं सदाचारः भवति। सदाचारेणैव सज्जनाः स्वकीयानि इन्द्रियाणि वशे कृत्वा सर्वैः सह शिष्टं व्यवहारं कुर्वन्ति।

विनयः हि मनुष्याणां भूषणम्। विनयशीलः जनः सर्वेषां जनानां प्रियः भवति। विनयः सदाचारात् उद्भवति। सदाचारात् न केवलं विनयः अपितु विविधाः अन्येऽपि सद्गुणाः विकसन्ति; यथा-धैर्यम्, दाक्षिण्यम्, संयमः, आत्मविश्वासः, निर्भीकता। अस्माकं भारतभूमेः प्रतिष्ठा जगति सदाचारादेव आसीत्। पृथिव्यां सर्वमानवाः स्वं स्वं चरित्रं भारतस्य सदाचार-परायणात् जनात् शिक्षेरन्। भारतभूमिः अनेकेषां सदाचारिणां पुरुषाणां जननी। एतेषां महापुरुषाणाम् आचारः अनुकरणीयः।

सदाचारः नाम नियमसंयमयोः पालनम्। इन्द्रियसंयमः सदाचारस्य मूले तिष्ठति। इन्द्रियसंयमः युक्ताहारविहारेण युक्तस्वप्नावबोधेन च सम्भवति। किं युक्तं किम् अयुक्तम् इति सदाचारेण निर्णेतुं शक्यते।

ये केऽपि पुरुषाः महान्तः अभवन् ते संयमेन सदाचारेणैव उन्नतिं गताः। यः जनः नियमेन अधीते, यथासमयं शेते, जागर्ति, खादति, पिबति च सः निश्चयेन अभ्युदयं गच्छति। सदाचारस्य महिमा शास्त्रेषु अपि वर्णितः–

सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः।
श्रद्धालुरनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति।।
आचाराल्लभते ह्यायुराचाराल्लभते श्रियम्।
आचाराल्लभते कीर्तिम् आचारः परमं धनम्।।

अतएव सदाचारः सर्वथा रक्षणीयः। महाभारते अपि सत्यम् एव उक्तं यत् अस्माभिः सदा चरित्रस्य रक्षा कार्या, धनं तु आयाति याति च, चरित्रं यदि नष्टं स्यात् तर्हि सर्वं विनष्टं भवति।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत्, वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो, वृत्ततस्तु हतोहतः।।

अभ्यास प्रश्न

• लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

१. सदाचारस्य कोऽर्थ:?
२. सज्जना: के भवन्ति?
३. मनुष्याणां भूषणं किमस्ति?
४. केषाम् आचार: अनुकरणीय:?
५. सर्वेषां जनानां प्रिय: क: भवति?
६. विनय: कस्मात् उद्भवति?
७. सदाचारात् के गुणा: विकसन्ति?
८. सदाचारस्य मूले क: तिष्ठति?
९. शतं वर्षाणि क: जीवति?
१०. जगति अस्माकं भारत भूमे: प्रतिष्ठा कस्मात् आसीत्?
११. क: जन: निश्चयेन अभ्युदयं गच्छति?
१२. अस्माभि: कस्य रक्षा कार्या?
१३. महाभारते किम् उक्तम्?

• अनुवादात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित अंशों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–**

(अ) सतां सज्जनानाम् .... व्यवहारं कुर्वन्ति।
(ब) विनय: हि मनुष्याणां .... आचार: अनुकरणीय:।
(स) सदाचार: नाम .... निर्णेतुं शक्यते।
(द) ये केऽपि पुरुषा: .... अपि वर्णित:।
(य) सर्वलक्षणहीनोऽपि .... परमं धनम्।
(र) अतएव सदाचार: .... विनष्टं भवति।
(ल) वृत्तं यत्नेन .... हतोहत:।

२. **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–**

(अ) सज्जनों का आचार ही सदाचार होता है।
(ब) संयम से लोग महान् हो जाते हैं।
(स) विनय सदाचार से उत्पन्न होता है।
(द) विनय मनुष्यों का आभूषण है।

(य) सदा चरित्र की रक्षा करनी चाहिए।
(र) विनयशील लोग सब लोगों के प्रिय होते हैं।
(ल) सज्जन सत् कहते हैं और सत् ही करते हैं।

● व्याकरणात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–**
तथैवाचरणम्, सज्जनः, अभ्युदयः, युक्ताहार, आचाराल्लभते।

२. **निम्नलिखित शब्द-रूपों में विभक्ति और वचन लिखिए–**
सज्जनाः, सर्वेषां, वशे, सदाचारात्, अस्माकं, भारतस्य।

३. **निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय लिखिए–**
अनुभवति, अनुकरणीयः, कृत्वा, सद्गुणाः।

● आन्तरिक मूल्यांकन

१. आपने कुछ सदाचारी महापुरुषों के बारे में पढ़ा होगा, उन महापुरुषों का नामोल्लेख करते हुए बताइए कि सबसे अधिक किस सदाचारी ने आपके मन को छुआ और क्यों?
२. सदाचार पर एक निबन्ध लिखिए।

शब्दार्थ

सद् = अच्छा। **ये** = जो। **तथैवाचरणम्** = तथा + एव + आचरणम् = वैसा ही व्यवहार। **आचरन्ति** = आचरण करते हैं। **सह** = साथ। **स्वकीयानि** = स्वयं की। **शिष्टं** = विनम्र। **सदाचारेणैव** = सदाचार से ही। **मनुष्याणां** = मनुष्यों का। **सदाचारात्** = सदाचार से। **दाक्षिण्यम्** = शिष्टाचार, शालीनता। **अन्येऽपि** = अन्य भी। **उद्भवति** = पैदा होता है। **नियमसंयमयोः** = नियम और संयम का। **युक्ताहार** = युक्त + आहार = अच्छा भोजन। **विहारेण** = विहार से। **युक्तस्वप्नावबोधेन** = सही समय पर सोना और जागना। **अयुक्तम्** = अनुचित। **अभ्युदयः** = उन्नति। **श्रद्धालुः** = श्रद्धा रखनेवाला। **अनसूयः** = दूसरों का दोष न देखनेवाला। **आचाराल्लभते** = आचार से प्राप्त करते हैं। **रक्षणीय** = रक्षा करते हैं। **उक्तम्** = कहा गया है। **आयाति** = आता है। **वृत्तं** = चरित्र। **वित्तम्** = धन। **हतो** = नष्ट हुआ।

●

● तृतीयः पाठः

पुरुषोत्तमः रामः

(पुरुषों में श्रेष्ठ राम)

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी।।१।।

बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमाञ्छत्रुनिवर्हणः।
विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः।।२।।

महोरस्को महेष्वासो गूढजत्रुररिन्दमः।
आजानुबाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः।।३।।

समः समविभक्ताङ्गः स्निग्धवर्णः प्रतापवान्।
पीनवक्षा विशालाक्षो लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः।।४।।

धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च प्रजानां च हिते रतः।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान्।।५।।

प्रजापति समः श्रीमान् धाता रिपुनिषूदनः।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता।।६।।

रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता।
वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः।।७।।

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान् प्रतिभावान्।
सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः।।८।।

स च नित्यं प्रशान्तात्मा मृदुपूर्वं च भाषते।
उच्चमानोऽपि परुषं नोत्तरं प्रतिपद्यते।।९।।

कदाचिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यति।
न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मशक्तया।।१०।।

सर्वविद्याव्रतस्नातो यथावत् साङ्गवेदवित्।
अमोघक्रोधहर्षश्च त्यागसंयमकालवित्।।११।।

अभ्यास प्रश्न

● लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

१. राम: कस्मिन् वंशे उत्पन्न: आसीत्?

२. जीवलोकस्य रक्षक: क: आसीत्?

३. राम: गाम्भीर्ये केन सम: आसीत्?

४. क: प्रजापति: सम: श्रीमान् आसीत्?

५. राम: वीर्ये केन सदृश: आसीत्?

६. क: साङ्गवेदवित् आसीत्?

७. रामस्य के विशिष्टा: गुणा: आसन्?

● अनुवादात्मक प्रश्न

१. निम्नलिखित श्लोकों का ससन्दर्भ हिन्दी-अनुवाद कीजिए–

(अ) इक्ष्वाकुवंशप्रभवो ………………………………… धृतिमान् वशी।

(ब) बुद्धिमान् नीतिमान् ……………………………………… महाहनु:।

(स) धर्मज्ञ: सत्यसन्धश्च ………………………………… समाधिमान्।

(द) प्रजापति सम: ……………………………………………… परिरक्षिता।

(य) स च नित्यं ……………………………………………… प्रतिपद्यते।

२. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(अ) राम बड़े धैर्यवान् और कान्तिमान् थे।

(ब) राम मृदुभाषी थे।

(स) राम लोक के रक्षक थे।

(द) वे धनुर्विद्या में निपुण थे।

(य) राम दूसरों का कल्याण करते थे।

(र) राम स्वजनों की रक्षा करते थे।

(ल) श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम थे।

● व्याकरणात्मक प्रश्न

(१) **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए–**
पुण्यात्मा, नियतात्मा, विशालाक्षो, प्रशान्तात्मा।

(२) **निम्नलिखित शब्द-रूपों में विभक्ति एवं वचन लिखिए–**
रामात्, रामेभ्य:, रामाणाम्, रामाभ्याम्, रामौ।

(३) जिस प्रकार **मान शब्द** लगाकर बुद्धिमान बना है, उसी प्रकार **मान् प्रत्यय** लगाकर चार शब्द बनाइए।

(४) **निम्नलिखित शब्दों में समास-विग्रह कीजिए–**
सुललाट:, महाबाहु:, क्रोधहर्षौ, रामलक्ष्मणौ।

● आन्तरिक मूल्यांकन

राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया है। श्रेष्ठ पुरुष के गुणों की एक सूची बनाइए।

शब्दार्थ

इक्ष्वाकुवंशप्रभवः = इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न। **जनैः** = लोगों के द्वारा। **श्रुतः** = सुना गया। **नियतात्मा** = जिसका मन वश में हो। **द्युतिमान्** = कान्तिमान्। **धृतिमान्** = धैर्यवान्। **वशी** = इन्द्रियों को जीतनेवाला। **वाग्मी** = कुशल वक्ता। **श्रीमाञ्छत्रुनिवर्हणः** = श्रीमान् + शत्रु + निवर्हण: = श्रीसम्पन्न एवं शत्रु का नाश करनेवाला। **विपुलांसो** = ऊँचे कन्धोंवाला। **कम्बुग्रीवो** = शंख के समान गर्दनवाला। **महाहनुः** = बड़ी ठोड़ीवाला। **महोरस्को** = विशाल वक्षस्थलवाला। **महेष्वासो** = विशाल धनुषवाला। **गूढजत्रुः** = जिसकी नसें मांस में दबी हों। **अरिन्दमः** = शत्रु का दमन करनेवाला। **विशालाक्षो** = विशाल नेत्रोंवाला। **शुचिः** = पवित्र। **वश्यः** = वशीभूत। **धाता** = सहारा देनेवाले। **निषूदनः** = दबानेवाला। **निष्ठितः** = निपुण। **स्मृतिमान्** = अच्छी स्मृतिवाले। **प्रतिभावान्** = अपने ज्ञान का सदुपयोग करनेवाला। **अदीनात्मा** = स्वतन्त्र। **विचक्षणः** = चतुर, विद्वान्। **अभिगतः** = सहित। **सर्वशास्त्रार्थ तत्त्वज्ञः** = सभी शास्त्रों के अर्थ का ज्ञाता। **नित्यं** = सदा। **नोत्तरं** = उत्तर नहीं देते। **कदाचिदुपकारेण** = एक बार उपकार। **तुष्येति** = सन्तुष्ट हो जाते हैं। **वीर्ये** = पराक्रम में। **साङ्ग** = अंगों सहित। **पृथिवीसमः** = पृथ्वी के समान।

●

● **चतुर्थः पाठः**

सिद्धिमन्त्रः

(सफलता का मन्त्र)

रामदासः नारायणपुरे निवसति। सः नित्यं ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय नित्यकर्माणि करोति, नारायणं स्मरति, ततः परं पशुभ्यः घासं ददाति। अनन्तरं पुत्रेण सह सः क्षेत्राणि गच्छति। तत्र सः कठिनं श्रमं करोति। तस्य श्रमेण निरीक्षणेन च कृषौ प्रभूतम् अन्नम् उत्पद्यते। तस्य पशवः हृष्ट-पुष्टाङ्गाः सन्ति, गृहं च धनधान्यादिपूर्णम् अस्ति।

अत्रैव ग्रामे पैतृकधनेन धनवान् धर्मदासः निवसति। तस्य सकलं कार्यं सेवकाः सम्पादयन्ति। सेवकानाम् उपेक्षया तस्य पशवः दुर्बलाः क्षेत्रेषु च बीजमात्रमपि अन्नं नोत्पद्यते। क्रमशः तस्य पैतृकं धनं समाप्तम् अभवत्। तस्य जीवनम् अभावग्रस्तं जातम्।

एकदा वनात् प्रत्यागत्य रामदासः स्वद्वारि उपविष्टं धर्मदासं दुर्बलं खिन्नं च दृष्ट्वा अपृच्छत्, ''मित्र धर्मदास! चिराद् दृष्टोऽसि! किं केनापि रोगेण ग्रस्तः, येन एवं दुर्बलः।'' धर्मदासः प्रसन्नवदनं तम् अवदत् ''मित्र! नाहं रुग्णः, परं क्षीणविभवः इदानीम् अन्य इव संजातः। इदमेव चिन्तयामि केनोपायेन मन्त्रेण वा सम्पन्नः भवेयम्।'' रामदासः तस्य दारिद्र्यस्य कारणं तस्यैव अकर्मण्यता इति विचार्य एवम् अकथयत्, ''मित्र! पूर्वं केनापि दयालुना साधुना मह्यम् एकः सम्पत्तिकारकः मन्त्रः दत्तः, यदि भवान् अपि तं मन्त्रम् इच्छति तर्हि तेन उपदिष्टम् अनुष्ठानम् आचरतु, मित्र! शीघ्रं कथय तदनुष्ठानं येनाहं पुनः सम्पन्नः भवेयम्।'' रामदासः अवदत्, ''मित्र! नित्यं सूर्योदयात् पूर्वम् उत्तिष्ठ, स्वपशूनां च उपचर्यां स्वयमेव कुरु, प्रतिदिनं च क्षेत्रेषु कर्मकाराणां कार्याणि निरीक्षस्व। अनेन तव अनुष्ठानेन प्रसन्नः सः महात्मा वर्षान्ते अवश्यं तुभ्यं सिद्धिमन्त्रं दास्यति इति।''

विपन्नः धर्मदासः सम्पत्तिम् अभिलषन् वर्षम् एकं यथोक्तम् अनुष्ठानम् अकरोत्। नित्यं प्रातः जागरणेन तस्य स्वास्थ्यम् अवर्धत्। तेन नियमेन पोषिताः पशवः स्वस्थाः सबलाः च जाताः; गावः महिष्यः च प्रचुरं दुग्धम् अयच्छन्। तदानीं तस्य कर्मकराः अपि कृषिकार्ये सन्नद्धाः अभवन्। अतः तस्मिन् वर्षे तस्य क्षेत्रेषु प्रभूतम् अन्नम् उत्पन्नम्, गृहं च धनधान्यपूर्णं जातम्।

एकस्मिन् दिने प्रातः रामदासः क्षेत्राणि गच्छन् दुग्धपरिपूर्णपात्रं हस्ते दधानं प्रसन्नमुखं धर्मदासम् अवलोक्य अवदत्, ''अपि कुशलं ते, वर्धते किं तव अनुष्ठानम्? किं महात्मानं मन्त्रार्थम् उपगच्छाव?'' धर्मदासः प्रत्यवदत्, ''मित्र! वर्षपर्यन्तं श्रमं कृत्वा मया इदं सम्यग् ज्ञातं यत् 'कर्म' एव स सिद्धिमन्त्रः। तस्यैव अनुष्ठानेन मनुष्यः सर्वम् अभीष्टं फलं लभते। तस्यैव अनुष्ठानस्य प्रभावेण सम्प्रति अहं पुनः सुखं समृद्धिं च अनुभवामि।'' तत् श्रुत्वा प्रहृष्टः च रामदासः यथास्थानम् अगच्छत्। सत्यमेव उक्तम्–

उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्।
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः।।

अभ्यास प्रश्न

• लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(१) रामदास: कुत्र निवसति?
(२) नारायणपुरे कौ निवसत:?
(३) रामदास: प्रात:काले उत्थाय किं करोति?
(४) रामदास: कदा उत्तिष्ठति?
(५) रामदास: केन सह क्षेत्राणि गच्छति?
(६) धर्मदासस्य दारिद्रयस्य किं कारणम् आसीत्?
(७) सिद्धिमन्त्र: किम् अस्ति?
(८) रामदास: धर्मदासेन किम् अपृच्छत्?
(९) केन कारणेन धर्मदासस्य स्वास्थ्यम् अवर्धयत्?
(१०) धर्मदास: कथं सम्पन्नम् अभवत्?
(११) लक्ष्मीनिवासहेतो: कं स्वयं याति?
(१२) किम् कृत्वा मनुष्य: सर्वम् अभीष्टं फलं लभते?

• अनुवादात्मक प्रश्न

(१) निम्नलिखित अनुच्छेदों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(अ) रामदास: नारायणपुरे ....अस्ति।
(ब) अत्रैव ग्रामे ....जातम्।
(स) एकदा वनात् ....सम्पन्न: भवेयम्।
(द) रामदास: तस्य ....दास्यति इति।
(य) विपन्न: धर्मदास: ....धनधान्यपूर्णं जातम्।
(र) एकस्मिन् दिने ....अनुभवामि।
(ल) उत्साहसम्पन्न ....निवासहेतो:।

(२) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(अ) रामदास नारायणपुर में रहता है।
(ब) नित्य सूर्य निकलने से पहले उठो।
(स) ग्वाला गायों को घास देता है।
(द) उसका पैतृक धन समाप्त हो गया।
(य) प्रतिदिन अपने कार्यों का निरीक्षण करो।
(र) कल हम साधु के पास जायेंगे।
(ल) धर्मदास दु:खी था।
(व) कर्म ही सिद्धिमन्त्र है।
(श) वह कठिन परिश्रम करता है।

● व्याकरणात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए–**
सूर्योदय, पुष्टाङ्गाः, धान्यादि, वर्षान्ते, महात्मा।

२. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए–**
अत्र + एव, परम् + औदार्यम्, केन + उपायेन, न + अहं, यथा + उक्तम्।

३. **निम्नलिखित धातु-रूपों के लकार, पुरुष एवं वचन लिखिए–**
अवदत्, करोति, अपृच्छत्, दास्यति, अभवत्।

४. **निम्नलिखित शब्द-रूपों में विभक्ति एवं वचन लिखिए–**
पुत्रेण, तस्य, दारिद्रयस्य, मन्त्रे, दिने।

५. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–**
प्रसन्नः, निर्धनः, दुर्बलः, अपेक्षा, अकर्मण्यता।

६. **निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय अथवा उपसर्ग लिखिए–**
दुर्बलः, उपगच्छावः, कृत्वा, श्रुत्वा।

७. **निम्नलिखित वाक्यों में मोटे छपे शब्दों में विभक्ति सहित कारक एवं प्रयोग का कारण लिखिए–**
(क) रामदासः **पुत्रेण** सह क्षेत्राणि गच्छति।
(ख) सः कठिनं **श्रमं** करोति।

● आन्तरिक मूल्यांकन

(1) सफलता प्राप्त करने के लिए आप क्या-क्या कार्य करते हैं? उसकी एक सूची बनाइये।
(2) प्रस्तुत पाठ से आपको क्या शिक्षा मिलती है, उसकी एक सूची बनाइए।

शब्दार्थ

ब्राह्मे मुहूर्त्ते = बहुत सवेरे। **उत्थाय** = उठकर। **नित्यकर्माणि** = दैनिक कार्य। **श्रमम्** = परिश्रम, मेहनत। **प्रभूतम्** = अधिक। **हृष्ट-पुष्टाङ्गाः** = स्वस्थ शरीरवाले। **सम्पादयन्ति** = करते हैं। **अत्रैव** = यहीं। **सकलम्** = सम्पूर्ण। **उपेक्षया** = देख-रेख के अभाव में। **नोत्पद्यते** = पैदा नहीं होता। **पैतृक धनम्** = पैतृक सम्पत्ति। **अभावग्रस्तम्** = अभाव में। **प्रत्यागत्य** = लौटकर। **स्वद्वारि** = स्वयं के द्वार पर। **खिन्नम्** = खिन्न, दुःखी। **चिराद्दृष्टोऽसि** = बहुत समय बाद दिखायी पड़ रहे हो। **क्षीणविभवः** = ऐश्वर्यहीन। **अनुष्ठानम्** = विधिपूर्वक किया गया कार्य, वृत्त। **उपचर्या** = सेवा। **कर्मकाराणाम्** = श्रमिकों के। **वर्षान्ते** = वर्ष के अन्त में। **विपन्नः** = दुःखी। **अभिलषन्** = इच्छा करता हुआ। **यथोक्तम्** = कहे अनुसार। **प्रचुरम्** = अधिक। **सन्नद्धाः अभवन्** = जुट गये। **महिष्यः** = भैसें। **दुग्धपरिपूर्णपात्रम्** = दूध से भरे हुए बर्तन को। **हस्ते दधानम्** = हाथ में लिये हुए। **सम्यक्** = अच्छी तरह। **अभीष्टम्** = इच्छित। **सम्प्रति** = अब, इस समय। **अदीर्घसूत्रम्** = निरालस्य, जो आलसी न हो। **व्यसनेष्वसक्तम्** = बुरे कामों में न लगा हो। **शूरम्** = वीर। **कृतज्ञम्** = दूसरे के द्वारा की गयी भलाई को माननेवाला। **दृढ़सौहृदम्** = पक्की मित्रता करनेवाला। **याति** = जाती है।

●

● पञ्चमः पाठः

सुभाषितानि

(सुन्दर उक्तियाँ)

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतैरपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणैरपि।।१।।

मनीषिणः सन्ति न ते हितैषिणः,
हितैषिणः सन्ति न ते मनीषिणः।
सुहृच्च विद्वानपि दुर्लभो नृणाम्,
यथौषधं स्वादु हितं च दुर्लभम्।।२।।

चक्षुषा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधम्।
प्रसादयति या लोकं तं लोको नु प्रसीदति।।३।।

अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं साधुना जयेत्।
जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम्।।४।।

अकृत्वा परसन्तापमगत्वा खलमन्दिरम्।
अनुल्लङ्घ्य सतां मार्गं यत् स्वल्पमपि तद् बहु।।५।।

सत्याधारस्तपस्तैलं दयावर्तिः क्षमा शिखा।
अन्धकारे प्रवेष्टव्ये दीपो यत्नेन वार्यताम्।।६।।

त्यज दुर्जनसंसर्गं भज साधु समागमम्।
कुरु पुण्यमहोरात्रं स्मरनित्यमनित्यताम्।।७।।

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा-
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुण-परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं,
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।।८।।

अभ्यास प्रश्न

● लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

१. लोक: कं प्रसीदति?

२. क्रोधं केन जयेत्?

३. अनृतं केन जयेत्?

४. असाधुं केन जयेत्?

५. अंधकारे प्रवेष्टव्ये यत्नेन क: वार्यताम्?

६. कीदृशो मार्ग: सर्वोत्तम: भवति?

७. कस्य: बुद्धि: विकसिता भवति?

८. कीदृशा: जना: लोके दुर्लभा:?

९. क: तमो हन्ति?

१०. लोके कियन्त: सन्त: सन्ति?

● अनुवादात्मक प्रश्न

१. निम्नलिखित श्लोकों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(अ) वरमेको गुणी .... तारागणैरपि।

(ब) मनीषिण: सन्ति ....दुर्लभम्।

(स) चक्षुषा मनसा .... प्रसीदति।

(द) अक्रोधेन .... चानृतम्।

(य) मनसि वचसि .... कियन्त:।

२. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(अ) सूर्य पूर्व से निकलता है।

(ब) जो विद्वान् होते हैं, वे हितैषी नहीं होते हैं।

(स) जो मुझे प्रसन्न रखता है, मैं उसे प्रसन्न रखता हूँ।

(द) असत्य को सत्य से जीतना चाहिए।

(य) एक चन्द्रमा ही अंधकार को नष्ट कर देता है।

(र) कन्जूसी को दान से जीतना चाहिए।

(ल) सौ मूर्खों की अपेक्षा एक गुणवान् पुत्र श्रेष्ठ है।

● व्याकरणात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित धातु-रूपों में लकार, वचन तथा पुरुष लिखिए–**
सन्ति, जयेत्, कुरु, त्यज, भवति।

२. **निम्नलिखित शब्द-रूपों में विभक्ति एवं वचन लिखिए–**
मनसा, कर्मणा, अक्रोधेन, दानेन, साधुना।

३. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–**
साधु, असत्यम्, दुर्लभम्, चन्द्रः, कदर्यम्।

४. **अकृत्वा** एवं **गत्वा** में प्रत्यय बताइए।

● आन्तरिक मूल्यांकन

१. पाठ को पढ़ने के बाद आपको क्या शिक्षा मिलती है? अभिव्यक्त कीजिए।

२. जो श्लोक आपके मन को छू गये हैं, उन्हें कण्ठस्थ करें।

शब्दार्थ

मनीषिणः = विद्वान्। **हितैषिणः** = हित चाहनेवाला। **नृणाम्** = मनुष्यों में। **यथौषधम्** = जैसे ओषधि। **चक्षुषा** = नेत्र से। **वाचा** = वाणी से। **चतुर्विधम्** = चार प्रकार से। **तं** = उसके प्रति। **प्रसादयति** = प्रसन्न करता है। **अक्रोधेन** = क्रोध न करने से। **असाधुम्** = दुर्जन को। **जयेत्** = जीतना चाहिए। **कदर्यम्** = कंजूस को। **अकृत्वा** = न करके। **अनुल्लङ्घ्य** = बिना उल्लंघन किये। **परसन्तापम्** = दूसरे को दु:खी करना। **अगत्वा** = न जाकर। **तद्** = वह। **सत्याधारः** = सत्य ही आधार है। **दयावर्तिः** = दयारूपी बत्ती। **तपस्तैलम्** = तप ही तेल है। **शिखा** = लौ। **वार्यताम्** = जलाना चाहिए। **काये** = शरीर में। **पुण्यपीयूषपूर्णा** = पुण्यरूपी अमृत से भरे हुए। **प्रीणयन्तः** = प्रसन्न करते हैं। **परगुण** = दूसरों के गुण। **परमाणून** = परमाणुओं को। **पर्वतीकृत्य** = पर्वत (जैसा) बनाकर। **निजहृदि** = अपने हृदय में। **सन्तः** = सज्जन लोग। **कियन्तः** = कितने हैं।

●

● **षष्ठः पाठः**

परमहंसः रामकृष्णः

(रामकृष्ण परमहंस)

इस पाठ में परम सिद्ध महात्मा स्वामी रामकृष्ण के तपः पूत सिद्धि प्रदर्शन से विमुक्त चरित्र का निरूपण किया गया है। सिद्धि साधना के लिए होती है न कि प्रदर्शन के लिए। इस स्वरूप के मूर्त रूप परमहंस का मानना था कि जन कल्याण ही मानव का उत्कृष्ट धर्म है एवं दुःखी लोगों की सेवा करना ही ईश्वर की परम उपासना है।

रामकृष्णः एकः विलक्षणः महापुरुषः अभवत्। तस्य विषये महात्मना गान्धिना उक्तम्—

"परमहंसस्य रामकृष्णस्य जीवनचरितं धर्माचरणस्य प्रायोगिकं विवरणं विद्यते। तस्य जीवनम् अस्मभ्यम् ईश्वरदर्शनाय शक्तिं प्रददाति। तस्य वचनानि न केवलं कस्यचित् नीरसानि ज्ञानवचनानि अपितु तस्य जीवन-ग्रन्थस्य पृष्ठानि एव। तस्य जीवनम् अहिंसायाः मूर्तिमान् पाठः विद्यते।"

स्वामिनः रामकृष्णस्य जन्म बंगेषु हुगलीप्रदेशस्य कामारपुकुरस्थाने १८३६ ख्रिस्ताब्दे अभवत्। तस्य पितरौ परमधार्मिकौ आस्ताम्। बाल्यकालादेव रामकृष्णः अद्भुतं चरित्रम् अदर्शयत्। तदानीमेव ईश्वरे तस्य सहजा निष्ठा अजायत्। ईश्वरस्य आराधनावसरे स सहजे समाधौ अतिष्ठत्।

परमसिद्धोऽपि सः सिद्धीनां प्रदर्शनं नोचितम् अमन्यत्। एकदा केनचित् भक्तेन कस्यचित् महिमा एवं वर्णितः, "असौ महात्मा पादुकाभ्यां नदीं तरति, इति महतो विस्मयस्य विषयः।" परमहंसः रामकृष्णः मन्दम् अहसत् अवदत् च "अस्याः सिद्धेः मूल्यं पणद्वयमात्रम्, पणद्वयेन नौकया सामान्यो जनः नदीं तरति। अनया सिद्धया केवलं पणद्वयस्य लाभो भवति। किं प्रयोजनम् एतादृश्याः सिद्धेः प्रदर्शनेन।"

रामकृष्णस्य विषये एवंविधा बहवः कथानकाः प्रसिद्धाः सन्ति। आजीवनं सः आत्मचिन्तने निरतः आसीत्। अस्मिन् विषये तस्य अनेके अनुभवाः लोके प्रसिद्धाः।

तस्य एव वचनेषु तस्य अध्यात्मानुभवाः वर्णिताः–

(१) "जले निमज्जिताः प्राणाः यथा निष्क्रमितुम् आकुलाः भवन्ति तथैव चेत् ईश्वर–दर्शनाय अपि समुत्सुकाः भवन्तु जनाः तदा तस्य दर्शनं भवितुम् अर्हति।"

(२) "किमपि साधनं साधयितुं मत्कृते दिनत्रयाधिकः कालः नैव अपेक्ष्यते।"

(३) "नाहं वाञ्छामि भौतिकसुखप्रदां विद्याम्, अहं तु तां विद्यां वाञ्छामि यथा हृदये ज्ञानस्य उदयो भवति।"

अयं महापुरुषः स्वकीयेन योगाभ्यासबलेनैव एतावान् महान् सञ्जातः। स ईदृशः विवेकी शुद्धचित्तश्च आसीत् यत् तस्य कृते मानवकृताः विभेदाः निर्मूलाः अजायन्त। स्वकीयेन आचारेण एव तेन सर्वं साधितम्।

विश्वविश्रुतः स्वामी विवेकानन्दः अस्यैव महाभागस्य शिष्यः आसीत्। तेन न केवलं भारतवर्षे अपितु पाश्चात्यदेशेष्वपि व्यापकस्य मानवधर्मस्य डिण्डिमघोषः कृतः। तेन अन्यैश्च शिष्यैः जनानां कल्याणार्थं स स्थाने-स्थाने रामकृष्णसेवाश्रमाः स्थापिताः। ईश्वरानुभवः दुःखितानां जनानां सेवया पुष्यति, इति रामकृष्णस्य महान् सन्देशः।

अभ्यास प्रश्न

• लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

१. स्वामिनः रामकृष्णस्य जन्म कुत्र कदा च अभवत्?

२. रामकृष्णः परमहंसः कीदृशः पुरुषः आसीत्?

३. कस्य जीवनचरित धर्माचरणस्य प्रायोगिकं विवरणं विद्यते?

४. रामकृष्णस्य पितरौ कीदृशौ आस्ताम्?

५. एकदा भक्तेन कस्यचित् किं महिमा वर्णितः?

६. रामकृष्णः कथं महान सञ्जातः?

७. स्वामी विवेकानन्दः कस्य शिष्यः आसीत्?

८. रामकृष्णस्य विषये महात्मा गान्धिनः किम् उक्तम्?

९. रामकृष्णस्य कः महान् संदेशः?

१०. रामकृष्ण सेवाश्रमाः केन स्थापिताः?

११. ईश्वरानुभवः केषां जनानां सेवया पुष्यति?

• अनुवादात्मक प्रश्न

(१) निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(अ) परमहंसस्य .... पाठः विद्यते।

(ब) स्वामिनः रामकृष्णस्य ....अतिष्ठत्।

(स) परमसिद्धोऽपि ....प्रदर्शनेन।

(द) रामकृष्णस्य विषये ....उदयो भवति।

(य) विश्वविश्रुतः ....महान सन्देशः।

(२) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(अ) रामकृष्ण एक विलक्षण महापुरुष थे।

(ब) उनका जन्म बंगाल में हुआ था।

(स) वे सभी से स्नेह करते थे।

(द) मैं भौतिक सुख नहीं चाहता हूँ।

(य) रामकृष्ण बड़े महात्मा थे।

(र) उनके माता-पिता धार्मिक थे।

● व्याकरणात्मक प्रश्न

(१) निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए–

धर्माचरण, नोचितम्, आराधनावसरे, बलेनैव, योगाभ्यास, सेवाश्रमा:।

(२) निम्नलिखित शब्दों में समास-विग्रह कीजिए एवं समास का नाम लिखिए–

रामलक्ष्मणौ, रात-दिन, पितरौ।

(३) निम्नलिखित शब्द-रूपों में विभक्ति एवं वचन लिखिए–

परमहंसस्य, बंगेषु, ईश्वरे, जनानां।

(४) निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग अथवा प्रत्यय लिखिए–

मूर्तिमान, आजीवन, विलक्षण:।

● आन्तरिक मूल्यांकन

१. रामकृष्ण परमहंस के जीवन की प्रमुख घटनाओं पर पोस्टर तैयार कीजिए।

२. किसी अन्य महापुरुष के बारे में एक निबन्ध लिखिए, जैसे–स्वामी विवेकानन्द।

शब्दार्थ

विलक्षण: = अलौकिक। **उक्तम्** = कहा था। **प्रायोगिकम्** = व्यवहार में लाया हुआ। **मूर्तिमान्** = साकार। **पादुकाभ्यां** = दो खड़ाऊँओं से। **पण** = पुराने समय का सिक्का। **बंगेषु** = बंगाल प्रदेश। **ख्रिस्ताब्दे** = ईसवी सन् में। **सहजा** = स्वाभाविक। **निष्ठा** = विश्वास। **आराधनावसरे** = ईश्वर की आराधना के समय। **नोचितम्** = उचित नहीं है। **एतादृश्या:** = इस प्रकार की। **निरत:** = शामिल। **निमज्जिता:** = डूबे हुए। **निष्क्रमितुम् आकुला:** = बाहर निकलने के लिए व्याकुल। **मत्कृते** = मेरे लिए। **अपेक्ष्यते** = आवश्यक है। **सुखप्रदाम्** = सुख देनेवाली। **मानवकृता:** = मानव द्वारा निर्मित। **निर्मूला:** = बेकार। **महाभागस्य** = महानुभाव के। **बलेनैव** = बल से ही। **विश्वविश्रुत:** = विश्व भर में प्रसिद्ध। **डिण्डिमघोष:** = उच्च स्तर में उद्घोषणा, ढिंढोरा पीटना। **जनानाम्** = मनुष्यों के। **ईश्वरानुभव:** = ईश्वर का अनुभव। **पुष्यति** = पोषित होता है। **इति** = ऐसा।

●

● **सप्तमः पाठः**

कृष्णः गोपालनन्दनः

(गोपालनन्दन कृष्ण)

इस पाठ में पुष्टि पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण के लिए अलौकिक लोकोपकारी 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' कृत कार्यों का विशद् निरूपण किया गया है। यहाँ श्रीकृष्ण के गोपालनन्दक स्वरूप का उल्लेख आध्यात्मिक दृष्टि से समस्त इन्द्रियों के पुष्टिकारक और आनन्द प्रदायक रूप का निदर्शन है।

सुविदितमेव श्रीकृष्णः लोकोत्तरो महापुरुषः आसीत्। अयं महापुरुषः सहस्रेभ्यः वर्षेभ्यः प्राक् उत्पन्नः अद्यापि जनानां हृदयेषु विराजमानः अस्ति।

श्रीकृष्णस्य मातुलः कंसः अत्याचारी शासकः आसीत्। स पूर्वं स्वभगिन्याः देवक्याः श्रीवसुदेवेन सह विवाहम् अकरोत्, पश्चाच्च आकाशवाण्या देवकीपुत्रेण स्वमृत्युसमाचारं विज्ञाय उभावपि कारागारे न्यक्षिपत्। तत्रैव कारागारे श्रीकृष्णः जातः।

श्रीकृष्णस्य जन्म भाद्रपदमासस्य कृष्णपक्षस्य अष्टम्यां तिथौ मथुरायाम् अभवत्। मध्यरात्रे यदायं उत्पन्नः जातः तदा आकाशे घटाटोपाः मेघाः मुसलधाराः वर्षाः अकुर्वन्। तदा रात्रिः अन्धकारपूर्णा आसीत्, परं वसुदेवः पुत्रस्य रक्षार्थं सद्योजातं तम् आदाय उत्तालतरङ्गां यमुनाम् उत्तीर्य गोकुले नन्दगृहं प्रापयत्। तत्र बाल्यादेव श्रीकृष्णः जनानां हृदयवल्लभः अभवत्।

बाल्यकाले अयं स्वसौन्दर्येण बाललीलया च सर्वेषां जनानां मनांसि अहरत्। कापि गोपिका तम् अङ्के निधाय स्वगृहं नयति, अपरा तं दुग्धं पाययति, अन्या च तस्मै नवनीतं ददाति। श्रीकृष्णः प्रेम्णा दत्तं दुग्धं पिबति, नवनीतं च खादति, अवसरं प्राप्य स स्वमित्रैः गोपैः सह कस्मिंश्चिद् गृहे प्रविश्य दधि खादति, मित्रेभ्यः ददाति, अवशिष्टं दधि भूमौ पातयति यदा कदा दधिभाण्डं च त्रोटयति। एतत् सर्वं कुर्वतोऽपि तस्य शीलेन सौन्दर्येण च प्रभावितः न कोऽपि तस्मै क्रुध्यति, परं सर्वे तस्मिन् स्निह्यन्ति।

अनन्तरं श्रीकृष्णः गोपालैः सह वनं गत्वा गाः चारयति, तत्र च वेणुं वादयति, अनेन सर्वाः गावः गोपालाश्च सर्वाणि कार्याणि विहाय तस्य वेणुवादनं शृण्वन्ति। महाकविः व्यासः संस्कृतभाषायां, भक्तकविः सूरदासः हिन्दी भाषायां तस्य बाललीलायाः अतिसुन्दरं वर्णनम् अकरोत्।

यदा अयं बालः एव आसीत् तदा कंसः तं हन्तुं क्रमशः बहून् राक्षसान् प्रेषयत, परं श्रीकृष्णः स्वकौशलेन शौर्येण च तान् सर्वान् अहन्। स न केवलं राक्षसेभ्यः अपितु अन्याभ्यः विपद्भ्यः गोकुलवासिनो जनान् अरक्षत्। एकदा वर्षाकाले गोकुले यमुनायाः जलं वेगेन अवर्धत्, तदा श्रीकृष्णः स्वप्राणान् अविगणय्य सर्वान् गोकुलनिवासिनः अरक्षत्। एवं निरन्तरं गोकुलवासिनां जनानां कष्टानि निवारयन् तेषां हृदये पदमधारयत्। अतः श्रीकृष्णः बाल्यकालादेव स्वोत्तमैः गुणैः परोपकारभावनया च लोकप्रियः अभवत्।

अभ्यास प्रश्न

• लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

१. श्रीकृष्ण: क: आसीत्?

२. कंस: क: आसीत्?

३. श्रीकृष्णस्य जन्म कुत्र अभवत्?

४. श्रीकृष्णस्य जन्म कदा अभवत्?

५. किं विज्ञाय कंस: देवकीवसुदेवौ कारागारे न्यक्षिपत्?

६. यदा श्रीकृष्ण: उत्पन्न: जात: तदा वातावरणं कीदृशम् आसीत्?

७. श्रीकृष्ण: कथं लोकप्रियो अभवत्?

८. वसुदेवेन सद्योजात: कृष्ण: कथं रक्षित:?

९. आकाशवाणीं श्रुत्वा कंस: किम् अकरोत्?

१०. श्रीकृष्ण: गोपै: सह कस्मिंश्चिद् गृहे प्रविश्य किं करोति?

११. क: कवि: संस्कृतभाषायां कृष्णबाललीलाया: वर्णनम् अकरोत्?

१२. क: कवि: हिन्दी भाषायां कृष्णबाललीलाया: वर्णनम् अकरोत्?

१३. श्रीकृष्ण: गोकुलवासिनां किं कल्याणं अकरोत्?

१४. कंस: राक्षसान् किमर्थम् प्रेषयत्?

• अनुवादात्मक प्रश्न

(१) निम्नलिखित अनुच्छेदों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(अ) श्रीकृष्णस्य मातुल: ....श्रीकृष्ण: जात:।

(ब) श्रीकृष्णस्य जन्म .... अभवत्।

(स) बाल्यकाले अयं ....स्निह्यन्ति।

(द) अनन्तरं श्रीकृष्ण: ....अकरोत्।

(य) यदा अयं बाल: ....अभवत्।

(२) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(अ) श्रीकृष्ण लोकोत्तर महापुरुष थे।

(ब) श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ था।

(स) बचपन से ही लोग उनसे स्नेह करते थे।

(द) उन्होंने गोकुलवासियों का बड़ा कल्याण किया।

(य) श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाते थे।

(र) सूरदास ने हिन्दी भाषा में बाललीला का बहुत सुन्दर वर्णन किया था।

(ल) वे अपने सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध थे।

● व्याकरणात्मक प्रश्न

(१) निम्नलिखित पदों में समास-विग्रह कीजिए–

नन्दगृहम्, लोकप्रियः, मृत्युसमाचारम्, दधिभाण्डम्, गोकुलवासिनः।

(२) निम्नलिखित में सन्धि-विच्छेद कीजिए–

अत्याचारी, परोपकारः, लोकोत्तरो, उभावपि, यदायं।

(३) भूमि, जल तथा सूर्य के चार-चार पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(४) श्रीकृष्ण पर पाँच वाक्य संस्कृत में लिखिए।

● आन्तरिक मूल्यांकन

श्रीकृष्ण के जीवन की कथा अपने शब्दों में लिखिए।

शब्दार्थ

लोकोत्तरो = अलौकिक। **मातुलः** = मामा। **प्राक्** = पहले। **उभावपि** = दोनों को। **न्यक्षिपत्** = डाल दिया। **मध्यरात्रे** = आधी रात में। **रक्षार्थ** = रक्षा के लिए। **सद्योजातं** = तुरन्त उत्पन्न। **आदाय** = लेकर के। **उत्तालतरंगां** = ऊँची-ऊँची तरंगों वाली। **उत्तीर्य** = पार करके। **प्रापयत्** = पहुँचा दिया। **हृदयवल्लभः** = हृदय को प्रिय। **अहरत्** = हर लिया। **निधाय** = लेकर। **पाययति** = पिलाती। **प्रेम्णा** = प्रेमपूर्वक। **चारयति** = चराते हैं। **वेणुं** = वंशी। **वादयति** = बजाते हैं। **विहाय** = त्यागकर। **शृण्वन्ति** = सुनते हैं। **हन्तुम्** = मारने के लिए। **प्रेषयत्** = भेजा। **शौर्येण** = वीरता से। **अहन्** = मारा। **अविगणय्य** = चिन्ता न करके। **निवारयन्** = निवारण करते हुए। **पदमधारयत्** = स्थान बना लिया। **सर्वोत्तमैः** = सबसे उत्तम। **अभवत्** = हो गये। **दधिभाण्डम्** = दही का बर्तन। **त्रोटयति** = तोड़ता है। **स्वोत्तमैः** = (स्व + उत्तमैः) अपने उत्तम। **लोकप्रियः** = प्रसिद्ध।

●